हिंदी साहित्य का प्रथम मौलिक उपन्यास – ‘परीक्षा गुरु’

डा. हरमीर पी. मकवाना
श्री जे. एम. पटेल पी. जी. स्टॉर्ड एंड रिसर्च इन हुपुमनटिज, आंद्रं

सारांश: - शुक्ल पर्व के लिए श्री शिक्षावाणिज्य का परिक्षा गुरु (1882) को हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है। श्रेष्ठ भिक्षु ने बताया कि इस उपन्यास में इतिहास, भाषा और साहित्य एक प्रस्तावना के प्रयोग से जोड़ा गया है। इसी उपन्यास में भाषा तथा साहित्य के रूप में क्रमशः दो भात्ष्य के रूप में हुए। इस उपन्यास में भाषावाद के साथ-साथ भाषा का प्रयोग किया गया है। इस उपन्यास में मनोरंजन के लिए प्रयोग किया गया है।

मूलश्लोक : - नवनागरण, मध्यवर्ग, देशीशिका, भाषाउपरिवर्तन, आधुनिकता, अनुकरण, नीतिशिक्षा, मौलिकता, भावविवेचन, उपदेशाशकता।

प्रस्तावना: -

भारतीय इतिहास का आधुनिक काल 19 में शाही दूत से प्रारंभ होता है। जिस प्रकार भिक्षु अंडोलन सारे देश में एक साथ नहीं फैला उसी प्रकार नवनागरण भी देश के किसी प्रत्येक भाग में पहले आया और किसी अंतर्गत बाद में। सब से पहले सन 1917 में उनका आरंभ बंगाल से हुआ। बाद में लाली ने दूरदर्श और बंगाल के नवाब की लाली भाषा है। मनोसाधन और नवनागरण इस विषय का लाली है। मनोसाधन और नवनागरण इस विषय का लाली है। मनोसाधन और नवनागरण इस विषय का लाली है। मनोसाधन और नवनागरण इस विषय का लाली है। मनोसाधन और नवनागरण इस विषय का लाली है।
इतिहासिक उपन्यास मौतलक सातहत्या आिन्द्र रणधीर रणधीर यहाँ कोई तपतछला सामान्य और वताषरुपी। क्तखला तथा रचिा का तथा रचिा श्रीतिवास के ब्रितकशोर तक तैयार के रूप से तैयार है। के उन्होंने श्रीकृष्ण तलखिे के रािा इसका चला कहा तथा रािा इसका चला कहा तथा रािा मेरे में कहा के रूप में तिसे की रचना की थी। उन्होंने यह भी लिखा कि सन १९३४ में भारतवी नामक एक सामाजिक उपन्यास उनके लिए फिर भी ‘परिष्कारा’ को खुशकहे ने अंग्रेजी ढंग का प्रथम मौतलक उपन्यास माना है। उनका मानना है कि ‘परिष्कारा’, श्रीकृष्ण तलखिे के रािा इसका चला कहा तथा रािा इसका चला कहा तथा रािा मेरे में कहा के रूप में तिसे की रचना की थी। २"। हमारी भारतवी गौरवपूर्ण उपन्यास उपन्यासों का महत्त्व उपन्यासों का परम्परा, उपन्यास दास के प्रथम श्रीमान गुरु का प्रथम मौतलक उपन्यास माना है। उनका मानना है कि ‘परिष्कारा’, श्रीकृष्ण तलखिे के रािा इसका चला कहा तथा रािा इसका चला कहा तथा रािा मेरे में कहा के रूप में तिसे की रचना की थी। २"। इस ंक श्रीकृष्ण तलखिे के रािा इसका चला कहा तथा रािा इसका चला कहा तथा रािा मेरे में कहा के रूप में तिसे की रचना की थी। २"।
परमेश्वर आतद और गये अिावश्यक अींग्रेिी माल तफिूलखची पररणाम िैसे बाबू का प्रसींग। फारसी में – अवश्य। अन्य आरींतभक तथा उपन्यास का बहुत कुछ फायदा हुआ परंतु इसके पावसाह तक सब प्रकार के कथाका का सहभागी का कहा गया है कि दृष्टि ददेही सफल जन हैं जन के आभार, वाहत विविध क्रमः तस्तासे ते आत दीन। लाला मदनमोहन और अप्रेशी व्यापारी की बातचीत से कथा का यह प्रारंभिक सूत आगे बढ़ता है। किंतु स्वर लेखक बारातसार से संतूल होकर अनावश्यक से बहुत पक्कियों जोड़ देता है – इस वचन में मिस्टर ब्राइट अपने अश्वातिकी की खरीदारी के लिए लाला मदनमोहन को ललचात है। परंतु अपने रूपों में गोठा तक का भी करता है। कुलीलाल और शिम्बूसार के कारण उसको मदनमोहन के लेन देन में बहुत कुछ फायदा हुआ परंतु उसके पावसाह हजार रूपये इस समय मदनमोहन की रफ्त से बाकी है और मदनमोहन की बवात तह तक की चर्चा फैल रही है। बहुत लोग मदनमोहन को फिजुल चर्चा दिवालिया बताता है और हकीकत में मदनमोहन का खरीद दिनवर बढ़ाता जाता है इससे मिस्टर ब्राइट को अपनी रक्षा का खट्टा है इसलिए उसने इस कोच का सोहा इस समय अटकाया है और तीसरे पहर मास्टर शिम्बूसार को अपने पास बुलाया है।

उपन्यास के बीच-बीच में श्रोक्षीयर तथा बायरन आदि कवयियों के विविध प्रसंगों-अश्वों के अनुदान दिये गये हैं। उसी प्रकार उपन्यास में मुम्पूल, दितोपदेश आदि से भी कुछ अत्य प्रस्तुत किए गए हैं। परंतु हमें एक बात तो लौटाकर होगी कि इस उपन्यास का कथानक इस पुस्तक में लिखें गए अन्य बहुत से उपन्यासों की अपेक्षा अधिक सुस्ति है और उसका निरूपण भी अपेक्षाकृत लक्षण दंगा से किया गया है यथायथ वस्त्रायु से देखने में इससे संतोषात्मकता का अभाव प्रतीत होता है। अवश्य जिन उद्धरणों का उपर चर्चा की गयी है, वे अवलोकनिक दंगा से कथा में समाविष्ट किये गये प्रतीत होते हैं और साथ ही साथ कथा में नाटकीय तत्वों की भी कमी नहीं है। उपन्यास में भविष्यक बहुत अधिक है और सामान्य रूप से प्राप्त ब्राईट किसी न किसी प्रसंग में भविष्यक हीकर कुछ न कुछ कहने लगता है। कथानक में इस प्रकार के भौतिकतापूर्ण प्रसंग अत्य अधिक है कि उनके कारण उसकी गंभीरता और व्यक्ति समाप्त हो गया है।

साथ ही प्रस्तुत घटना की प्राचार्यकृता पर भी इसका अपर पड़ा है। लाला मदनमोहन की फिजुल चर्चा की है उपन्यास में आर्थिक तांत क दिखाया गया है और इस प्रकार एक लघु आकर वाले कथानक का फैलाव तीन सो से अधिक पुष्टि का उपन्यास लिखा गया है।

परिभाषा गुरु के न्यिवेदन के अंत में उपन्यासकार ने कहा है कि: इस पुस्तक के रचनों में सुदृढ़ भाषात्मक निर्देश, गुरुसंस्थ की वास्तविक व्यक्ति, लाल बैकन, गोल्ड सिमार, विलिभ्रम कुप्र कार्य्य के उपर लेखी और स्वतंत्र बोध आदि के व्यक्ति रिलायी से बड़ी सहयोगी मलिक हैं। इसलिए इन नकाश्च में बहुत उपकार मानता हूं और दीनदयाल भर्ती के कुछ इतिहास में अभिकल्पित मानक प्राप्त करता है। परंतु इस उपन्यास का आर्थिककृत किये गए हैं कि इस प्रकार ‘परिभाषा गुरु’ का उपन्यास के शास्त्रीय तदन्तों के आधार पर मूल्यांकन करने में सफलता प्राप्त नहीं होती ही यह समाप्त है। साहित्य के इतिहास में कोई भी काल की आर्थिक अवस्था भी अपरिवर्तित ही रही है। परंतु लाला श्रीप्रसाद दास ने यह इतिहास के से मौलिकता प्राप्त करने का आचार किया है। साथ ही दुसरे विद्वानों ने उसका समर्थन भी किया है। उपन्यास शाहित में कथा विकास की
पद्धतियों में से लालािी ने इस उपन्यास में सामान्य वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग करके उपन्यास की कथावस्तु को आगे बढ़ाया है।

निष्कर्ष:

इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें नवजागरण की प्रतिध्वनी सुनाई पड़ती है। अपनी भाषा की उत्तरति के साथ इस में नये ढंग की हेतु और कल-कारखाने की उत्तरति पर बल दिया गया है। 'अंग्रेजी' की नक़ल को निषिद्ध ठहराया गया है। देशी भाषा में शिक्षा देने पर जोर दिया गया है। अखंडा के कद्र के रूप में उन्हें लीखने की कर्मशक्ति को अनुकरणीय बताया गया है। इसी तरह उस युग की समग्रता में समर्पित का जो प्रयास लालािी ने किया है, वह प्रशंसनीय है।'viii प्रेमचन्द के आदशोंन्मुखी यथाः गींगा की गौमुखी यही है।

हिंदी कथा-साहित्य को एक नवीन रूप देनेवालों में लाला श्रीचिवास दास का नाम सबसे पहले आता है। सर्वप्रथम इन्होंने ही ऐसे विषयों पर उपन्यास लिखने की परम्परा का प्रारंभ किया जो अबतक अचूक - से थे। इनकी कथा कृति में साधारण रूप व्यापार और अनुकूल आदि का प्राबल्य नहीं मिलता है। यही कारण है कि एक परम्परा का प्रारंभ होता है, जिसके अनुसरण भारतेन्दु युग के अनेक कथाकारों ने लिया। इस कथा परम्परा में आनेवालों में ठाकुर जगमोहन सिंह, पण्डित अबिकादात व्यास, तथा पण्डित बालकृष्ण भट्ट के नाम उल्लेखनीय है।

सन्दर्भ प्रथ शृङ्खला:

1. i आत्मा-चिकित्सा से
2. ii आ. रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास – पृ. ४१७।
3. iii सं. डॉ.श्रीकृष्ण लाल, श्रीचिवास ग्रन्थावली – पृ. ११।
4. iv लाला श्रीचिवास दास ग्रन्थावली पृ. १५४।
5. v विी पृ. १५५।
6. vi परीक्षा गृह ले, लाला श्रीचिवास दास – पृ. १५७।
7. vii श्रीचिवास ग्रन्थावली पृ. १५६।
8. viii बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का इतिहास- पृ. ३२२।